२. समाज में विविधता

२.१ विविधता ही हमारी शक्ति

२.२ पंथनिरपेक्षता का सिद्धांत

२.३ हमारे व्यक्तित्व निर्माण में समाज का योगदान

२.४ समाज का नियमन

भारतीय समाज में अनेक भाषाएँ, धर्म, संस्कृति, रीति-रिवाज, परंपराएँ प्रचलित हैं । यह विविधता ही हमारी सांस्कृतिक संपन्नता है । हमारे आस-पास मराठी, कन्नड़, तेलुगु, बांग्ला, हिंदी, गुजराती, उर्दू आदि भाषाएँ बोलनेवाले लोग रहते हैं । वे सभी अलग-अलग पद्धतियों से तीज-त्योहार, उत्सव मनाते हैं । उनकी पूजा-अर्चना की पद्धतियाँ अलग-अलग होती हैं । विभिन्न ऐतिहासिक विरासत प्राप्त प्रदेश हमारे देश में हैं । इन सभी के बीच विविधता का आदान-प्रदान होता रहता है । वर्षों से एक साथ रहने के कारण एकता की भावना निर्मित हो गई है । इसके द्वारा ही भारतीय समाज की एकता दिखाई देती है ।

२.१ विविधता ही हमारी शक्ति

विभिन्न समूहों के साथ मिल-जुलकर रहना ही सहअस्तित्व अनुभव करना है । ऐसे सहअस्तित्व से हमारे बीच सामंजस्य बढ़ता है । इसके कारण हम एक दूसरे के रीति-रिवाजों और जीवन पद्धति से परिचित होते हैं । हम एक-दूसरे की जीवन पद्धति का आदर करना सीखते हैं । साथ ही दूसरों की कुछ प्रथाओं और परंपराओं को भी ग्रहण करते हैं । इसी से समाज में एकता बढ़ती है । सामाजिक एकता द्वारा हम प्राकृतिक और सामाजिक आपदाओं का सामना कर सकते हैं ।

२.२ पंथनिरपेक्षता का सिद्धांत

भारतीय समाज में विविध धर्मों के लोग रहते हैं । उनके बीच परस्पर सामंजस्य बढ़े; विभिन्न धर्म के लोगों को उनकी श्रद्धानुसार पूजा-अर्चना करने की स्वतंत्रता प्राप्त हो; इसलिए हमारे संविधान में महत्त्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं ।

संसार में भारत एक महत्त्वपूर्ण पंथनिरपेक्ष राष्ट्र है । हमारे देश में बड़ी मात्रा में भाषाई और धार्मिक विविधता पाई जाती है । इस विविधता को स्वस्थ रूप में संरक्षित रखने के लिए हमने पंथनिरपेक्षता सिद्धांत को स्वीकार किया है । जिसके अनुसार

- हमारे देश में शासन द्वारा किसी भी एक धर्म को मान्यता नहीं दी गई है ।
- प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने धर्म अथवा अपनी पसंद के धर्म की उपासना करने की स्वतंत्रता है ।
- धर्म के आधार पर व्यक्ति-व्यक्ति में भेदभाव नहीं किया जा सकता । सभी धर्मों के लोगों को शासन द्वारा समान अधिकार दिए गए हैं ।
- शिक्षा, रोजगार, सरकारी नौकरी आदि के अवसर सभी को उपलब्ध कराए गए हैं । इसमें धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता ।
- धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों को संरक्षण देने के लिए संविधान में विशेष प्रावधान किए गए हैं । अल्पसंख्यकों को उनकी भाषाई और सांस्कृतिक अस्मिता को संरक्षित रखने की पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है । शिक्षा के माध्यम से अपने-अपने समाज का विकास करने की स्वतंत्रता भी उन्हें दी गई है ।
- पंथनिरपेक्षता के सिद्धांत के कारण भारतीय समाज में सामंजस्य बना हुआ है ।

२.३ हमारे व्यक्तित्व विकास में समाज का योगदान

समाज में रहकर हम क्या सीखते हैं ? कौन-से गुण ग्रहण करते हैं ? हमारे व्यक्तित्व विकास में समाज किस प्रकार सहायता करता है ? इसको हम यहाँ समझेंगे ।

सहयोग: प्रत्येक समाज व्यक्ति और समूह के परस्पर सहयोग पर आधारित होता है । एक-दूसरे के

सहयोग के बिना किसी भी समाज का अस्तित्व नहीं रह सकता । एक-दूसरे की समस्याएँ और प्रश्नों को हल करने के लिए एक-दूसरे की पारस्परिक सहायता करना सहयोग कहलाता है । हमारे परिवार के सदस्यों में यदि ऐसी प्रवृत्ति न हो तो परिवार नहीं चल सकता, यही बात समाज की भी है । सहयोग के बिना समाज का विकास रुक जाता है और दैनिक जीवन सुचारु रूप से चल नहीं सकता । सहयोग के कारण समाज में पारस्परिक निर्भरता अधिक स्वस्थ रहती है और समाज के सभी लोगों को उसमें सम्मिलित कर लेना संभव होता है । सभी घटकों को साथ लेकर चलने की यह एक प्रकिया होती है ।

विचार-विमर्श करें ।

हमें समाज के कमजोर एवं पिछड़े वर्ग के लोगों और लड़कियों की शिक्षा तथा उनके विकास के लिए सहयोग देना चाहिए । इसके लिए शासन द्वारा कौन-कौन-सी योजनाएँ कार्यान्वित की गई हैं, उनकी जानकारी एकत्र करो । इन घटकों के विकास के लिए तुम क्या करोगे, इस विषय पर कक्षा में विचार-विमर्श करो । विचार-विमर्श के महत्त्वपूर्ण मुद्दे अन्य कक्षाओं के विद्यार्थियों तक भी पहुँचाओ ।

सहिष्णुता और सामंजस्य : समाज में जिस प्रकार सहयोग की भावना होती है, वैसे ही कभी-कभी मतभेद, विवाद और संघर्ष भी उत्पन्न होते हैं । व्यक्ति-व्यक्ति के बीच के मतों/विचारों और दृष्टिकोणों में सामंजस्य स्थापित न हो तो विवाद और संघर्ष निर्माण हो सकते हैं । एक-दूसरे के प्रति पूर्वाग्रह अथवा भ्रम भी संघर्ष के कारण हो सकते हैं । दीर्घकाल तक संघर्ष जारी रखना किसी के हित में नहीं होता । आपसी समन्वय और समझौतों के माध्यम से ही मनुष्य संघर्ष का निवारण करना सीखता है । यदि थोड़ा सामंजस्य रखते हुए सहिष्णुता वृत्ति को दर्शाएँ तो संघर्ष समाप्त हो सकता है ।

सामंजस्य की वजह से हम अनजाने में अनेक नई बातें सीखते हैं । नए विचारों को आत्मसात करते हैं । इन विचारों की मदद से हमारा सामाजिक जीवन अधिक समृद्ध बनता है । हमारी सहिष्णुता में वृद्धि होती है । सामाजिक स्वास्थ्य और शांति बनाए रखने के लिए इस एक सरल पद्धति को सीखने का अवसर समाज के कारण ही प्राप्त होता है ।

करके देखो :

तुम भी समाज में अनेक स्थानों पर समन्वय करते होगे । नीचे तुम्हारे ही कुछ अनुभव दिए गए हैं । उनमें कुछ अन्य अनुभवों को सम्मिलित करो ।

(अ) सभागृह लोगों से खचाखच भरा हुआ है । एक व्यक्ति बैठने के लिए जगह ढूँढ़ रहा है, उसे तुमने अपनी बैंच पर थोड़ी-सी जगह में बैठा लिया ।

(ब) तुम्हें गेयरवाली साइकिल चाहिए परंतु दीदी की फीस के पैसे भी भरने हैं । तुम अपनी जिद छोड़ देते हो ।

(क) खेती की मेंड़(सीमा) को लेकर पड़ोसी के साथ चल रहा विवाद न्यायालय में न ले जाकर तुमने आपस में ही हल कर लिया । पड़ोस का सोपान अब तुम्हारा प्रिय मित्र बन गया है ।

विविध भूमिकाएँ निभाने के अवसर : समाज में हमारी अनेक भूमिकाएँ होती हैं । एक ही व्यक्ति अनेक भूमिकाओं को निभाता रहता है । प्रत्येक भूमिका में कुछ दायित्व और कर्तव्य निश्चित होते हैं । परिवार और परिवार से बाहर इन्हीं भूमिकाओं में अनेक परिवर्तन भी होते रहते हैं ।

करके देखो :

विभिन्न भूमिकाएँ निभाने के अवसर : तुम्हारी वर्तमान भूमिका को बताने वाला चित्र अगले पृष्ठ पर देखो । २० वर्षों के बाद तुम्हें और किन-किन नई भूमिकाओं को निभाना पड़ेगा, उसपर विचार-विमर्श करो ।

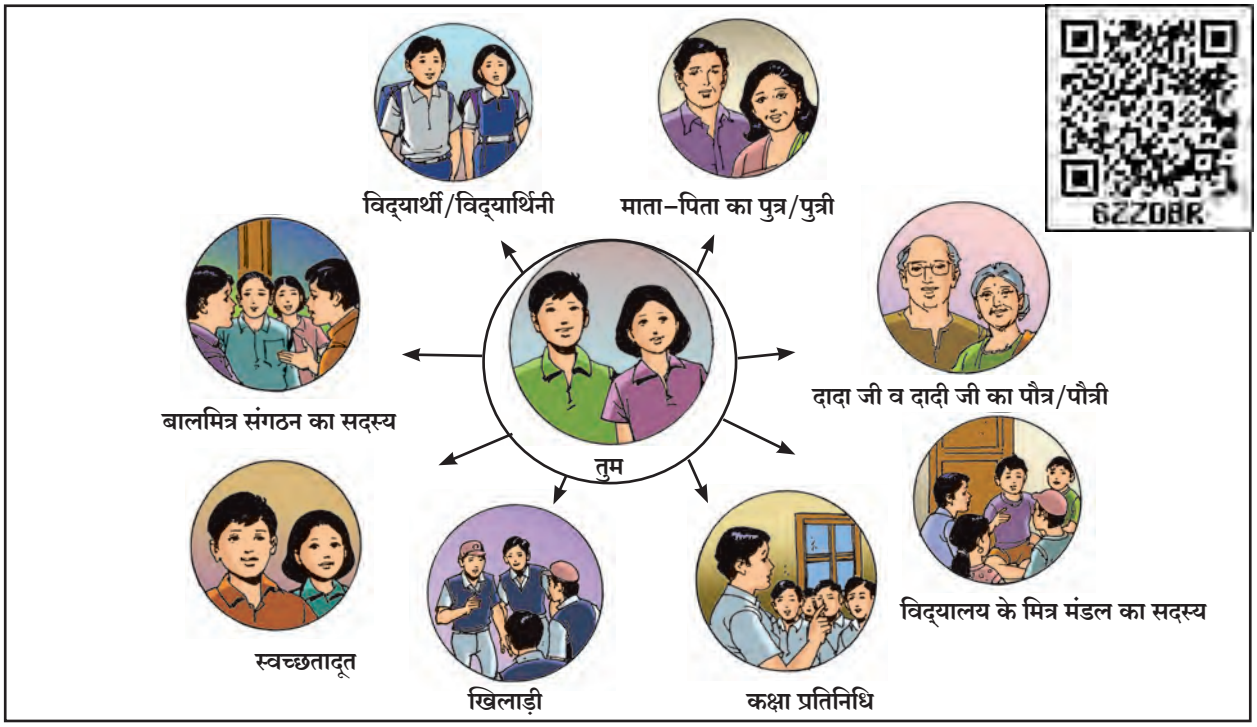

२.४ समाज का नियमन

समाज में दैनिक व्यवहारों को सरलता से चलाने के लिए कुछ नियमों की आवश्यकता होती है । पूर्व समय में समाज का नियमन अधिकांश रूप में रूढ़ी और परंपराओं द्‌वारा होता था परंतु आधुनिक समाज का नियमन रूढ़ी, परंपराओं के साथ-साथ कानून द्‌वारा भी हो रहा है । कानून का स्वरूप रूढ़ियों, परंपराओं, संकेतों की तुलना में भिन्न होता है । इन सभी बातों के आधार पर हमारे समाज का नियमन अनेक संस्थाओं व संगठनों द्‌वारा किया जाता है । स्थानीय शासन संस्थाएँ भी समाज के नियमन कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

स्वाध्याय

१. रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखो ।

(१) विभिन्न समूहों के साथ मिल-जुलकर रहना अर्थात ..... अनुभव करना है ।

(२) संसार में भारत एक महत्त्वपूर्ण ..... राष्ट्र है ।

(३) सहयोग के कारण समाज में ..... अधिक स्वस्थ होता है ।

२. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो ।

(१) सहयोग किसे कहते हैं ?

(२) हमने पंथनिरपेक्षता सिद्‌धांत को क्यों स्वीकार किया है ?

३. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखो ।

(१) भारतीय समाज की एकता किससे प्रकट होती है ?

(२) समाज में संघर्ष कब निर्माण होता है ?

(३) सहयोग से कौन-कौन-से लाभ होते हैं ?

(४) तुम्हारे सामने दो बच्चे लड़ रहे हैं, तो तुम क्या करोगे ?

(५) तुम विद्‌यालय के मंत्रिमंडल में मुख्यमंत्री हो, तुम कौन-कौन-से कार्य करोगे ?

उपक्रम :

(१) शिक्षकों की सहायता से विद्‌यालय में सहकारी सिद्‌धांत पर किशोर वस्तु भंडार चलाओ । उसके बारे में अपने अनुभव लिखो ।

(२) विद्‌यालय और कक्षा में तुम किन-किन नियमों का पालन करते हो, उनकी तालिका बनाकर कक्षा में लगाओ ।

* * *